एन.सी.बी. दर्पण

(वार्षिक पत्रिका)

वर्ष –2022, अंक – 3

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

एन सी बी हिंदी कार्यान्वयन समिति

महानिदेशक : डॉ बीबेकानंद महापात्र

पुर्वाध्यक्ष हिन्दी समिति : श्री अभिषेक अग्निहोत्री

अध्यक्ष हिन्दी समिति : श्रीमती पूनम कनौजिया

संपादक मंडल

श्री अभिषेक अग्निहोत्री

श्रीमती पूनम कनौजिया

श्रीमती रश्मि गुप्ता

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य
के गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता
देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसाद।

बनावट एंव साज–सज्जा :
श्री अभिषेक अग्निहोत्री
श्री देवेन्द्र बघेल

महानिदेशक
राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

सन्देश

मैं बहुत प्रसन्नित व गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ कि एन. सी. बी. राजभाषा कार्यान्वयन समिति अपने हिंदी पत्रिका "एनसीबी दर्पण" के तृतीय अंक का प्रकाशन कर रही है।

हिंदी हमारे स्वाभिमान की भाषा है। आत्मनिर्भर भारत का आधार हिंदी के मजबूत कंधो पर ही सशक्त हो सकता है। आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे देश के लिए सही समय है कि हम उन सपनों को साकार करने के लिये संकल्प लें, जो हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने देखे थे। ये स्वप्न थे भारत की संपूर्ण स्वतंत्रता और स्वाभिमान। इन सपनों को साकार करने में अन्य कारको के साथ–साथ हिंदी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

यदि हमें विश्व गुरु के पद पर पुनः प्रतिष्ठित होना है तो हमें अपनी हिंदी भाषा को समुचित सम्मान देना होगा। शिक्षा के भारतीयकरण का अभियान भी भाषा के माध्यम से ही होगा। हिंदी को लेकर जन स्वीकृति का जो स्वरूप बन रहा है उसे शिक्षा में उतारना होगा।

एन.सी.बी. में हिंदी भाषा का सभी स्तर पर अधिक से अधिक प्रयोग किया जा रहा है। सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ाते आ रहे है।

पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के महत्वपूर्ण प्रयासों के लिये में अग्रिम हार्दिक शुभकामनायें।

शुभकामनाओं सहित

बीबेकानन्द महापात्र

डॉ बीबेकानंद महापात्र

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

संपादक की कलम से

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शब्दों में "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। एक राष्ट्र, श्रेष्ठ राष्ट्र के लिए अति आवश्यक है कि हमारा राष्ट्र क्षेत्रीय भाषाओं के मोतियों को साथ मिलाकर राजभाषा का एक ऐसा हार बना सकें, जिसमें हम अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति सफलता पूर्वक कर सके। हम सबकी यह जिम्मेदारी है कि हम दृढ़ संकल्प के साथ राजभाषा को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें। राजभाषा सही मायनों में जिस दिन जन–जन की भाषा बनेगी उस दिन हम सबकी तरफ से स्वतन्त्रता सेनानियों को सच्ची श्रंद्धांजली होगी। हिंदी वर्णमाला अ (अज्ञानता) से आरंभ होकर ज्ञ (ज्ञानता) की तरफ ले जाती है। हिंदी भाषा का हृदय इतना विशाल है कि इतिहास में घात–प्रतिघात, विदेशियों के आगमन के बावजूद हिंदी भाषा ने सभी भाषाओं के शब्दों मे इसमें समावेश किया है।

भाषा या बोली की अपनी मिठास होती है। उसमें शिक्षा हासिल करने से अपने तरीके से सोचने की आजादी मिलती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी मानते थे कि "कोई भी युवा स्वंय में देशभक्ति का भाव तभी जगा सकता है जब वह अपने आस–पास या देश समाज में हो रही घटनाओं के प्रति जागरूक हो जो कि अपनी भाषा से ही संभव है''।

मैं, एन.सी.बी. दर्पण के तृतीय अंक में प्रकाशित रचनाकारों एवं कवियों का हृदय से स्वागत करता हूँ जिन्होने अपनी रचनाओं व कविताओं से एन.सी.बी. दर्पण पत्रिका को सजाया है।

"चलो मिलकर एक मुहिम चलाएगें
आज ही से हिंदी अपनाएंगे"

अभिषेक अग्निहोत्री

अनुक्रमणिका

क्र.स.		लेखक	पेज सं.
	प्रस्तावना		
1	एनसीबी का परिचय		1
2	राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता		3
3	हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन		4
4	वार्षिक गतिविधियाँ		5
	कविताएं		
5	तेरी शरण	आस्था सिंह	7
6	वर्दी	अनमोल सिंह	7
7	वो इक नारी है	अनुप्रीत राणा	8
8	"पिता"	रूबी राठी	8
9	ज़िन्दगी की चारदीवारी	सौरभ खरे	9
10	धूल से उठा हूँ मैं	सौरभ खरे	9
11	धरा–वसुंधरा	निरवान राठी	10
12	शीर्षकः मायूस न हो किस्मत किसी भी वक्त बदल सकती है।	सुरुचि अरुण राणा	10
13	अपनेपन की चली हवाएं	शौर्य गोस्वामी	11
14	कांरवां'	दिपांशु मलिक	12
15	घर की रौनक बेटियाँ	सुनीता	13
16	मेरे सपनों का भारत	याशिका	13
17	माँ	चारु	14
18	जज्बा–ए–जिंदगी	अंकुर मितल	16
19	अगली बारिशों में	लक्ष्मण सिंह	17
20	कोहरा और उजास	लक्ष्मण सिंह	17
21	मेरे नहीं हो तुम	डॉ सतीश चन्द्र शर्मा,	18
	रचनाएं		
22	हरा समन्दर गोपी चन्दर	श्रेय्शी नारायण	19
23	विकास की सीढ़ी शिक्षा	सुनीता	21
24	दादी माँ	नीरा वार्ष्णेय "नीराम"	23
25	वेबिनार एक सफल या असफल प्रयोग	कपिल इष्टवाल	27

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद
बल्लभगढ़

15.9.2021 11:22

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद
NATIONAL COUNCIL FOR CEMENT AND BUILDING MATERIALS
20.7.2022 16:42

28.9.2021 13:14

एन. सी. बी. का परिचय

सीमेंट और निर्माण सामग्री के व्यापार और उद्योग से जुड़े अनुसंधान और वैज्ञानिक कार्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद् (एनसीबी), (सीमेंट अनुसंधान संस्थान, सीआरआई) की स्थापना 24 दिसंबर 1962 को की गई थी।

आज, एनसीबी प्रौद्योगिकी विकास, स्थानांतरण, सतत शिक्षा और सीमेंट और निर्माण उद्योगों एंव औद्योगिक सेवाओं के लिए भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में प्रमुख संस्था है। सरकार सीमेंट उद्योग की वृद्धि और विकास से संबंधित गतिविधियों में, अपनी नीति और योजना के निर्माण के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए एनसीबी. नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। यह देश में सीमेंट और कंक्रीट के उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए समर्पित है। एनसीबी के हितधारक सरकार, उद्योग और समाज हैं, जो राष्ट्रीय जिम्मेदारी का निर्वहन करने, क्रमशः पर्याप्त तकनीकी सहायता प्रदान करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में एनसीबी की भूमिका को समझते हैं।

भौगोलिक रूप से, एनसीबी का अपना प्रमुख केंद्र और मुख्य प्रयोगशालाएँ बल्लभगढ़ (नई दिल्ली के पास) में स्थित हैं; अन्य स्थापित क्षेत्रीय इकाईयॉ, हैदराबाद, अहमदाबाद (गुजरात) और भुवनेश्वर (ओडिशा) में है। एनसीबी की बल्लभगढ़, हैदराबाद और अहमदाबाद की इकाइयाँ आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित हैं।

सीमेंट निर्माण और उपयोग में एनसीबी के निम्नलिखित कार्य क्षेत्र हैं – प्रक्रियाओं, मशीनरी, विनिर्माण पहलुओं, ऊर्जा और पर्यावरण संबंधी कारणों के माध्यम से वास्तविक निर्माण, सामग्री की निगरानी में अंतिम उपयोग के लिए कच्चे माल की भूवैज्ञानिक अन्वेषण के साथ शुरू और इमारतों और संरचनाओं का पुनर्वास।

एनसीबी आईएसओ 17025 मान्यता प्राप्त परीक्षण और अंशांकन सेवाएं, आईएसओ 17043 मान्यता प्राप्त प्रवीणता परीक्षण (पीटी) सेवाएं और आईएसओ 17020 मान्यता प्राप्त निरीक्षण सेवाएं प्रदान करता है। यह प्रमाणित संदर्भ सामग्री (सीआरएम) सीमेंट और निर्माण क्षेत्र को विकसित और आपूर्ति करता है। मानव संसाधन विकास के लिए, अल्पावधि और दीर्घकालिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से सीमेंट, कंक्रीट, और निर्माण सामग्री क्षेत्र में प्रशिक्षण सेवाएँ प्रदान करता ळें

सीमेंट प्रौद्योगिकी में पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम एआईसीटीई द्वारा मान्यता प्राप्त है। एनसीबी औद्योगिक सूचना सेवाओं के क्षेत्र में, सीमेंट, कंक्रीट और निर्माण सामग्री पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करता है। अब तक इस सेमिनार के 16 संस्करण आयोजित किए हैं। ये सभी गतिविधियाँ छह केंद्रो द्वारा संचालित होती हैं:

- **सीमेंट अनुसंधान एवं स्वतंत्र परीक्षण केन्द्र (सीआरटी)**–सीमेंट और अन्य बाइंडरों, अपशिष्ट उपयोग, दुर्दम्य और सिरामिक, मौलिक और बुनियादी अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधान गतिविधि के लिए केंद्र जिम्मेदार है। केंद्र सीमेंट और सीमेंट सामग्री और अन्य निर्माण सामग्री की परीक्षण गतिविधियों को भी देखता है।

- **खनन, पर्यावरण, संयंत्र इंजीनियरिंग एवं संचालन केंद्र (सीएमई)–** भूविज्ञान, खनन और कच्चे माल, पर्यावरण प्रबंधन, प्रक्रिया उपयोग और उत्पादकता, ऊर्जा प्रबंधन, संयंत्र रखरखाव और परियोजना इंजीनियरिंग और सिस्टम डिजाइनिंग के क्षेत्र में केंद्र अपनी गतिविधि करता है।

- **निर्माण विकास एवं अनुसंधान केंद्र (सीडीआर) –** संरचनात्मक मूल्यांकन और पुनर्वास, कंक्रीट प्रौद्योगिकी, निर्माण प्रौद्योगिकी और प्रबंधन और संरचनात्मक अनुकूलन और डिजाइन के क्षेत्र में अनुसंधान गतिविधियों के लिए केंद्र जिम्मेदार है।

- **गुणवत्ता प्रबंधन, मानक एवं अंशांकन सेवा केंद्र (सीक्यूसी) –** प्रवीणता परीक्षण, मानकों संदर्भ सामग्री, अंशांकन सेवाओं और कुल गुणवत्ता प्रबंधन के क्षेत्र में केंद्र उद्योग को सेवाएं प्रदान करता है।

- **औद्योगिक सूचना सेवा केंद्र (सीआईएस) –** सीआईएस आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रदान करता है। एनसीबी के प्रकाशनों, सेमिनारों और सम्मेलनों, अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संपर्क और छवि निर्माण का काम भी केंद्र देखता है।

- **सतत् शिक्षा सेवा केंद्र (सीसीई) –** सीमेंट, कंक्रीट और निर्माण के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की आवश्यकता आधार, उद्योग–उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम केंद्र आयोजित करता है।

  उपरोक्त छह सामाजिक केंद्रों की तकनीकी गतिविधियों का समर्थन करने के लिए एनसीबी के पास निम्नलिखित चार सेवा समूह हैं।

- **वित्त एवं लेखा (एफएएस) –** दिन–प्रतिदिन की वित्तीय गतिविधियों के प्रबंधन के लिए एफएएस जिम्मेदार है

- **मानव संसाधन एवं प्रशासनिक सेवा (एचआरएस) –** एचआरएस–जीईएन परिवहन के बुनियादी ढांचे और एचआरएस–पीईआर मानव संसाधन गतिविधि जैसे कि भर्ती, पदोन्नति, मूल्यांकन आदि प्रदान करता है।

- **संपति प्रबंधन एवं तकनीकी सेवा (ईटीएस) –** ईटीएस द्वारा कार्यक्षेत्र, उपयोगिताओं, उपकरण और संचार प्रौद्योगिकी अवसंरचना जैसे संसाधनों सहित बुनियादी ढांचे को बनाए रखा जाता है।

- **सामग्री प्रबंधन सेवा (एमएमएस) –** एमएमएस संगठन के विभिन्न विभागों की आवश्यकताओं के अनुसार कच्चे माल सहित उपकरणों की खरीद के लिए जिम्मेदार है।

> भारतवर्ष के लिए हिंदी भाषा ही सर्वसाधरण की भाषा होने के उपयुक्त है
> शारदाचरण मित्र

नराकास, फरीदाबाद, राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में प्रोत्साहन पुरस्कार

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद ने नराकास, फरीदाबाद, राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता (वर्ष 2019–20 एवं 2020–21) में प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। नराकास राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में पुरस्कार कोविड महामारी के कारण विगत 2 वर्षों के पुरस्कार एक साथ दिए गए।

श्री अभय कुमार सिंह, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एनएचपीसी एवं अध्यक्ष नराकास, डॉक्टर राजवीर सिंह, समूह निबंधन (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव नराकास, डॉ कुंवर पाल शर्मा, उपनिदेशक कार्यान्वयन, उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय एवं अन्य कार्यालय प्रमुख की उपस्थिति में ई–माध्यम के द्वारा 23 मई 2022 को कार्यालय को प्रदान किए गए।

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती। भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती
मैथिलीशरण गुप्त

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद् के मुख्यालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन 14 सितंबर 2021 से 28 सितंबर 2021 के बीच बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पखवाड़े का शुभारंभ 14 सितंबर 2021 को माननीय डॉक्टर विवेकानंद महापात्र महानिदेशक के कर कमलों द्वारा किया गया। पखवाड़े का शुभारंभ करते हुए महानिदेशक ने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि संस्थान में राष्ट्रभाषा के प्रचार प्रसार के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए तथा अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा में करना चाहिए, तथा राष्ट्र भाषा में कार्य करते समय हमें गौरवान्वित महसूस करना चाहिए। कोविड के केंद्र सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों का पालन करते हुए पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया इस पखवाड़े में निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

- हिंदी आदर्श वाक्य (स्लोगन) प्रतियोगिता
- वाद विवाद प्रतियोगिता
- शब्दावली प्रतियोगिता
- टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता
- हिंदी निबंध प्रतियोगिता
- कविता पाठ स्वविचार प्रतियोगिता

कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री अभिषेक अग्निहोत्री ने भी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए सभी को धन्यवाद दिया तथा भविष्य में संस्थान, नराकास तथा मंत्रालय के अंतर्गत होने वाली सभी प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आह्वान किया। इस प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार विजेताओं को कार्यालय के महानिदेशक एवं केंद्र प्रमुख के द्वारा समापन समारोह में सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद की वार्षिक हिंदी पत्रिका एनसीबी दर्पण के द्वतीय अंक में लेख/कविता/कहानी लिखने वाले सभी रचनाकारों को कार्यालय के वार्षिक उत्सव, दिनांक 24:12 2021 को श्री अनिल अग्रवाल, अपर सचिव आंतरिक व्यापार और उद्योग संवर्धन विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा सम्मानित किया गया।

वार्षिक गतिविधियाँ

विश्व पर्यावरण दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

स्वतंत्रता दिवस

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021

59वें एनसीबी दिवस

73वां गणतंत्र दिवस

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022

कविताएं

तेरी शरण

कुछ पल खुशी के आते हैं
हमें बहलाते फुसलाते हैं,
तेरी छलिया माया में मोहन
हम फिर फंसते ही जाते हैं।

ठगनी माया फिर खेल खिलाती है
जरा हँसा के बड़ा रुलाती है,
हम दुख में मोहन को मनाते हैं
दुख बीतते ही फिर इतराते हैं।

ये सुख–दुख का भेद अनोखा है
जिसे सुख समझा कुछ क्षण का टोना है ,
जो तेरे चरणों से बिछड़ गया
फिर कई जन्मों का रोना है।

खुशी नहीं जंजाम में हूँ
तेरी माया के जाल में हूँ ,
तुझे त्याग के सुख को ढूंढ रहा
हाय कितना कंगम मैं हूँ!

इसी खेल में जीवन बीत रहा
जीवन–लक्ष्य अभी भी दूर खड़ा ,
गिनती की साँसें हर पल गुजर रही
क्या लेकर जाएंगे कुछ समझ नही।

मैं बालक अबोध तुम तो ज्ञानी हो
मैं कण समान तुम कण–कण वासी हो,
मैं ना समझ तुम ही कुछ मदद करो
हे कृष्ण! अब अपनी शरण में लो!

आस्था सिंह

वर्दी

इच्छा बहुत है मन में
आवश्यकताएँ अभी भी हैं अधूरी,
जोश बहुत है तन – मन में
कोशिश फिर भी करनी है पूरी,
सितारों से लड़कर यह मौका हर लूँगा
मैं एक दिन वर्दी पहनूँगा।

शहीद होने से नहीं घबराता
देश को सुरक्षित रखना चाहता,
दुश्मन को मार गिराकर उसको पीछे छोड़ूँगा
मैं एक दिन वर्दी पहनूँगा।

चैन की नींद सोए सब यही कामना है मेरी
एक ही जिंदगी है देश के काम लानी है
जरूरी, बड़ा होकर यह मैं कर दिखाऊँगा
मैं एक दिन वर्दी पहन के आऊँगा।

अनमोल सिंह

वो इक नारी है

वो घर से निकलती है
नया इक मुकाम बनाती है
वो घर आ कर
अपनी भूमिका भी खूब निभाती है
वो इक नारी है, वो इक नारी है।

माँ बनकर ममता की बौछार लगाती है
पत्नी बनकर सुख – दुःख में साथ निभाती है
बहन बनकर कितना स्नेह लुटाती है
हर रूप में लगती प्यारी है
वो इक नारी है, वो इक नारी है।

क्षीण नहीं, अबला नहीं,
ना ही वह बेचारी है,
जोश भरा लिबास पहने,
गर्व से चलती, आज की नारी है
वो इक नारी है, वो इक नारी है।

आजादी के सफर में,
अब तंग गलियों का रुख मोड़ रही है,
प्रतिबंध की दीवारों को,
हौसलों के हथौड़े से वह तोड़ रही है
वो इक नारी है, वो इक नारी है।

कहने को तो वो है बहुत महान नारी है
नर की खान फिर भी मिलता नहीं उसको
उसका उचित स्थान आओ हम सब मिलकर
नारी का सम्मान करें
''उस पर गर्व करें आभिमान करें
उस पर गर्व करें आभिमान करें ''

अनुप्रीत राणा

"पिता"

पिता, ये वो स्तंभ है,
जिस पर सारा घर टिका है।
सारी खुशियाँ उनसे है,
सारे रिश्ते उनसे है।।

पहले जब भी कभी बुरे हालात होते थे,
कोई फिकर नहीं होती थी क्योंकि, पिता साथ होते थे।

आज, वो घर अधूरा है, वो खुशियाँ अधूरी है।
पिता के बिना जिन्दगी अधूरी है।।

आँगन में कितनी जगह, आज भी पिता की मौजूदगी है, छड़ी में, चश्मे में ,चप्पल में, सोफे में, बैठक में, मोबाइल में।
और घर के बाहर लिखे नाम मे।।

"सब ठीक है" कहने में अब भी,
गले रुंध जाते है।
"पिता" की याद में आज भी,
आंसू छलक आते।।

रूबी राठी

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित–अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं
राहुल सांकृत्यायन

ज़िन्दगी की चारदीवारी

ढलती शाम में,
लौट आया अपनी चारदीवारी में,
थक हार कर उजालों से लड़ झगड़ कर
आ गया अपने अंधियारों से उलझने के लिए

द्वन्द है ये रोज़ रोज़ का,
ना मैं जीतता हूँ,
ना ज़िन्दगी हारती है युद्ध घमासान है और
परिणाम कुछ भी हासिल नहीं

अपराजित हूँ, अविचलित हूँ,
फिर भी, विस्मित हूँ
रोज़ रोज़ देखकर,
कि चारदीवारी के रंग नहीं बदलते,
बदलते शहर की तरह
बदलते रिश्ते नातों की तरह

लिखता भी तो नहीं अब कुछ ज़्यादा,
मेज़ की दराज़ में जगह नहीं रही,
भीगे कागज़ों की कतरनों के लिए
और स्याही भी लजाती है,
दुनिया के उजालों की कालिमा देखकर

शब्द फिर भी थिरकते हैं,
मन मस्तिष्क में,
मद मस्त होकर नाचने के लिए
मायने अभी भी बाकी हैं,
शब्दों में,
पर परछाइयों को पढ़ना कहाँ आता है
और चारदीवारी के बाहर शोर बहुत हैं,
शब्दों के पास मायने हैं,
पर आवाज़ नहीं

आवाज़ तो दीवारों में भी नहीं,
पर, फिर भी बतिया लेती हैं
बेरंग सी दीवारें और पुरानी तस्वीरें,
देखो तो, पुरानी तस्वीरें आज भी चमकती हैं,

बाहर के उजालों से ज़्यादा,
महकते से रंग हैं
मेरी चारदीवारी के अंदर की दुनिया में
थक हार कर,
फिर लौट आता हूँ,
अगली सुबह फिर चलने के लिए,
सफ़र पर, मुझे और मेरी चारदीवारी, दोनों को
चलना ही होगा,
क्यूंकि, ज़िन्दगी कभी थकती नहीं
ज़िन्दगी कभी हारती नहीं ....

धूल से उठा हूँ मैं

धूल से उठा हूँ मैं .... धूल बन जाऊँगा
पृथ्वी से जुड़ा हूँ, पर व्योम तक जाऊँगा

कल्पना के पंख है और यथार्थ का भी भान है
कण कण को जोडकर, शिखर मैं बनाऊँगा

धीर हूँ, प्रशांत हूँ, एक आह्वान हूँ
स्वरों को साथ क्र, कोलाहल बनाऊँगा

अनुच्चरित हूँ, अव्यक्त हूँ, अभिव्यक्त हो जाऊँगा,

धूल से उठा हूँ मैं .... धूल बन जाऊँगा ।।

सौरभ खरे

हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है – राहुल सांकृत्यायन

धरा–वसुंधरा

हे। धरा वसुंधरा,
पृथ्वी माता।
जल, वन, जीवन
सब तुमसे पाता।।

तुमने दिए अनेकों पेड़,
जो देते औषिधियाँ अनेक।।
तुमसे हमारा हर पल का नाता,
वायु, अग्नि, जल सब तुमसे पाता।।

तुमने दी मौसम की बहार,
गर्मी सर्दी बसंत फुहार।
तुमसे जीवन का नाता,
आम, अमरूद, सेब,
तरबूज सब फल तुमसे पाता।।

हम सब तुमको नमन करें,
स्वच्छता का पालन करें।।

निरवान राठी

शीर्षकः मायूस न हो किस्मत किसी भी वक्त बदल सकती है।

परिंदों को मिलेगी मंजिल एक दिन
यह फैले हुये उनके पर बोलते है
और वही लोग रहते हैं।

खामोश अक्सर जमाने में जिनके हुनर बोलते हैंजिंदगी की असली उड़ान बाकी है जिंदगी के कई इम्तिहान बाकी है।

अभी तो नापी है
मुट्ठी भर जमीन हमने अभी तो सारा आसमान बाकी है
कश्ती डूब कर निकल सकती है।

शमा बुझ कर भी जल सकती है
मायूस ना हो इरादे ना बदल
किस्मत किसी भी वक्त बदल सकती है।
मंजिल भी उन्ही को मिलती है
जिनके सपनों में जान होती है
पंख से कुछ नहीं होता हौंसलों से भी उड़ान होती है।

सामने हो मंजिल तो रास्ते न मोड़ना
जो भी मन में हो वो सपने न तोड़ना
कदम कदम पे मिलेगी मुश्किल।

आपको बस सितारे चुनने के लिए कभी जमीन मत छोड़ना तालीम नहीं दी जाती
परिंदों को उड़ने की
वो तो खुद ही समझ जाते है ऊँचाइयाँ आसमानों की।

सुरुचि अरुण राणा

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपी
आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है
जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

अपनेपन की चली हवाएं

अपनेपन की चली हवाएं
हिंदी के श्रृंगार से
हिंदी के स्वर बुला रहे हैं
सात समंदर पार से।

आज विश्व में हिंदी के प्रति बढ़ने लगा लगाव है
एक मात्र भाषा है जिसमें सर्वधर्म समभाव है

हिंदी इतनी सहज है इसको
सब अपनाते प्यार से
हिंदी के स्वर बुला रहे हैं
सात समंदर पार से।

प्रगति पथ पर देश चला है हिंदी के विस्तार से
अनजाने अपने हो जाते हिंदी के व्यवहार से।
हिंदी के स्वर बुला रहे हैं
सात समंदर पार से।

हमारी राजभाषा है इसका तुम सम्मान करो
14 सितंबर हिंदी दिवस पूरे साल मनाया करो।
हिंदी के स्वर बुला रहे हैं सात समंदर पार से
हिंदी के स्वर बुला रहे हैं सात समंदर पार से।

जय हिंद 🙏

शौर्य गोस्वामी

हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता – पंडित गोविंद बल्लभ पंत

कांरवां'

बढ़ चला ये कांरवां
बिना रुके बिना थके
न भय अन्धकार का
न, रूकावट बन सका कोई
ये कांरवां उधर चला
जिधर न चल सका कोई

लक्ष्य माथे बंधकर
कमान में तीर कर
समापन के गीत थे
पग–पग पर जीतते
दुश्मनों को न होश था
रग–रग में जोश था
ह्रश तरंग गति का क्या करता कोई
ये कंफिला जिधर चला
उधर न चल सका कोई

दिशा से भ्रमित हवा हुई
मोन हो गया समुन्द्र
पहाड़ तक क्षैतिज बने
तुच्छ हो गया असुर
निर्जीव असफलता
क्या बेडें डालती कोई
ये निर्भयता उधर चली

बिना मुड़े बिना झुके
रण मैं वह अड़े चला
जंग लगी बैरी तलवार
क्या मार्ग रोकती कोई
यह विजय गति उधर चली

जिधर न चल सका कोई
समय की गति को रोक कर
बढे चला बढे चला
जिधर न चल सका कोई

अनन्तता को नाप कर
सर्वॅश्रेषट का जाप कर
वैभव भरा ललाट लिए

क्षैतिज वस्त्र धारण किये
अखंड उर्जा में
क्या विघ्न डालता कोई
यह अमरता उधर चली
जिधर न चल सका कोई

भय से भयभीत भय रहा
विखंडन को सह रहा
मोह माया को छोड़ कर
साये से मुँह मोड़ कर
अभाग्य, भाग्य पर
न प्रतिबिम्ब डाल सका कोई
यह त्यागता उधर चली
जिधर न चल सका कोई

दिपांशु मलिक

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है
(जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर।

घर की रौनक बेटियाँ

वह नन्हीं–सी कली,
अभी – अभी मुसकाई थी।

मेरे आँगन में आकर,
जिसने खुशबू अपनी फैलाई थी।

एक माँ होने का अहसास उसने ही कराया था,
जीवन पूरा होने का आभास उसने ही तो कराया था।

घर की रौनक होती हैं बेटियाँ
उसकी चहचाहटों ने समझाया था।

वह आज कुछ बड़ी हो गई है,
लड़कपन से जिम्मेदार हो गई है।

बेटी से मेरी सहेली हो गई है,
मेरे सुख –दुख की साँझी हो गई हैं।

पहले सजाती– सँवारती थी मैं उसे,
आज वह मुझे सजाती – सँवारती हैं।

वह आज मेरी परछाई हो गई है,
वह आज एक बेटी से माँ हो गई है।

सुनीता

मेरे सपनों का भारत

एक भारत श्रेष्ठ भारत,
मेरा अभिमान है भारत।

दुनिया जिसको नमन करे,
महान संस्कृतियों का द्योतक * भारत।

योग गुरू का प्रणेता भारत,
विश्व गुरू बनता भारत।

अध्यात्म का ज्ञाता भारत,
आत्मनिर्भर बनता भारत ।

यही है मेरे सपनों का भारत,
हर क्षेत्र में उभरता नया भारत।

*प्रतीकात्मक

याशिका

हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है
वी. कृष्णस्वामी अय्यर

माँ

खुदा हर जगह मौजूद नहीं रह सकता था, इसलिए उसने माँ बनाई
लेकिन आगे की कहानी किसी ने नहीं सुनाई, आज मैं सुनाती हूँ
ऐसा नहीं है, कि माँ को बनाकर खुदा ने कोई जश्न मनाया
बल्कि सच तो यह है, कि वो बहुत पछताया
कब उसका एक–एक जादू किसी ओर ने चुरा लिया, वो जान भी नहीं पाया
खुदा का काम था मोहब्बत, वो माँ करने लगी
खुदा का काम था हिफाजत, वो माँ करने लगी
खुदा का काम था बरकत, वो भी माँ करने लगी
देखते ही देखते उसकी आंखो के सामने, कोई ओर परवतदीगार हो गया
वो बहुत मायूस हुआ, बहुत पछताया
क्योकि माँ को बनाकर खुदा, खुद बेरोजगार हो गया
जब आँख खुली तो, अम्मा की गोदी का एक सहारा था
उसका नन्हा सा आँचल, मुझको भूमंडल से प्यारा था
उसके चेहरे की झलक देख, चेहरा फूलो सा खिलता था
उसके आँचल की एक बूंद से, मुझको जीवन मिलता था
हाथों से बालो को नोचा, पैरो से खूब प्रहार किया
फिर भी उस माँ ने पुचकारा, हमको जी भर के प्यार किया
मै उसका राजा बेटा था, वो आँख का तारा कहती थी
मै बनू बुढ़ापे में उसका, बस एक सहारा कहती थी

उंगली को पकड़ चलाया था, पढ़ने विद्यालय भेजा था
मेरी नादानी को भी निज, अंदर में सदा सहेजा था
मेरे सारे प्रश्नो का वो, फोरन जबाव बन जाती थी
मेरी राहों के काँटे चुन, वो खुद गुलाब बन जाती थी
मै बड़ा हुआ तो कॉलेज से, एक रोग प्यार का ले आया
जिस दिल में माँ की मूरत थी, वो रामकली को दे आया
शादी की पति से बाप बना, अपने रिश्तो में झूल गया
अब करवाचौथ मानता हूँ, माँ की ममता को भूल गया
हम भूल गए उसकी ममता, मेरे जीवन की ख्याति थी
हम भूल गए अपना जीवन, वो अमृत वाली छाती थी
हम भूल गए वो खुद, भूखी रह कर के हमे खिलाती थी
हमको सूखा बिस्तर देकर, खुद गीले में सो जाती थी
हम भूल गए उसने ही, होठों को भाषा सिखलाई थी
मेरी नींदो के लिए रात भर, उसने लोरी गई थी
हम भूल गए हर गलती पर, उसने डाँटा समझाया था
बच जाऊ बुरी नजर से, काला टीका मुझे लगाया था
हम बड़े हुए तो ममता वाले, सारे बंधन तोड़ आए
बंगले में कुत्ते पाल लिए, माँ को व्रद्धाश्रम छोड़ आए
उसके सपनों का महल गिराकर, कंकर–कंकर बीन लिए

खुदगर्जी में उसके सुहाग के, आभूषण तक छिन लिए
हम माँ को घर के बटवारे की, अभिलाषा तक ले आए
उसको पावन मंदिर से, गाली की भाषा तक ले आए
माँ की ममता को देख मौत भी, आगे से हट जाती है
अगर माँ अपमानित होती, धरती की छाती फट जाती है
घर को पूरा जीवन देकर, बेचारी माँ क्या पाती है
रूखा–सूखा खा लेती है, पानी पीकर सो जाती है
जो माँ जैसी देवी घर के, मंदिर में नहीं रख सकते है
वो लाखो पुण्य भले कर ले, इंसान नहीं बन सकते है
माँ जिसको भी जल दे दे, वो पौधा संबल बन जाता है
माँ के चरणों को छूकर , पानी गंगाजल बन जाता है
माँ के आँचल ने युगो–युगो से, भगवानों को पाला है
माँ के चरणों में जन्नत है, गिरजाघर और शिवाला है
माँ कबीरा की साखी जैसी, माँ तुलसी की चौपाई है
मीराबाई की पदावली, खुसरो की अमर रुबाई है
माँ आँगन की तुलसी जैसी, पावन बरगद की छाया है
माँ वेद ऋचाओ की गरिमा, माँ महाकाव्य की काया है
माँ मानसरोवर ममता का, माँ गौमुख की ऊंचाई है
माँ परिवारों का संगम है, माँ रिश्तों की गहराई है

माँ हरी दूब है धरती की, माँ केसर वाली क्यारी है
माँ की उपमा केवल माँ है, माँ हर घर की फुलवारी है
सातों सुर नर्तन करते जब, कोई माँ लोरी गाती है
माँ जिस रोटी को छू लेती है, वो प्रसाद बन जाती है
माँ हँसती है तो, धरती का जर्रा–जर्रा मुस्काता है
देखो तो दूर क्षितिज अंबर, धरती को शीश झुकता है
माना मेरे घर की, दीवारों मे चंदा सी सूरत है
पर मेरे मन के मंदिर में, बस केवल माँ की मूरत है
माँ सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, अनुसुइया, मरियम, सीता है
माँ पावनता में रामचरित मानस है, भगवतगीता है
अम्मा तेरी हर बात मुझे, वरदान से बढ़कर लगती है
हे माँ तेरी सूरत मुझको, भगवान से बढ़कर लगती है
सारे तीरथ के पुण्य जहां, मैं उन चरणों मे लेता हूँ
जिनके कोई सनातन नहीं, मैं उन माँओ का बेटा हूँ
हर घर में माँ की पूजा हो, ऐसा संकल्प उठता हूँ
मैं दुनिया की हर माँ के, चरणों में ये शीश झुकाता हूँ

चारू

देश को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है – सेठ गोविंददास

जज्बा–ए–जिंदगी

कोशिश करने से ही मंजिल मिला करती है।
देर से ही सही पर हर मुश्किल आसान होती है।
तपती मरुधरा से भी जल का जखीरा फूट जाएगा।
कर साधना अर्जुन सी और तीर हर लक्ष्य भेद जायेगा।

उठा कदम आगे बढ़ और सींच सपनों का बगान
गर तू ठाने तो बंजर जमीन भी होगी एक दिन गुलिस्तान
साहस, योजना, कर्म और संकल्प है जब मिले

देख कैसे बन ही जाते हैं कामयाबी के किले
रख जिंदा अपनी सोच और योजनाओं को
देख कामयाबी का अमृत कैसा बेताब है आने को
कुछ करना है और आगे बढ़ना है।

मिसाले कामयाबी की कहानी बनना है।
छण भंगुर होते है सपने, जो नींदों में देखे जाते हैं।
पूरे वो सपने होते है जो नींदे ही उड़ा ले जाते हैं।

अंकुर मितल

हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति
रामवृक्ष बेनीपुरी

अगली बारिशों में

बारिशें धूल मिट्टी से खेली है।
तब जाकर कहीं किसी किलकारी से
बीज में दरार पड़ी
किसी कोंपल का जन्म हुआ
कंही वृक्ष में फूल खिला
बढती देह/घटती उम्र
अतीत को पालती पोस्ती बूंदे
टूटती फलती–फूलती रहती हैं डालियाँ
आंधी तूफानों में
वर्षो तक अंकित
मानस पटल पर पदचाप
उमड़ती–घुमड़ती यादें
छलकती गागर, भिगोती सोखती
आदम के बजूद को
दीवारों पर चुनी मिट्टी
गिरने लगती है अडिग पहाड़
देखो इन बूंदों ने
कितनी मिट्टी को एकत्रित किया है
ढेर में दबा यह छोटा सा कण
कितना जल पिया है
अब देर से उड़–उड़
छाने लगी है दूर–दूर तक
उड़ती धूल संकेत है
उसके गिरने का
अगली बारिशों में धुलकर बुनने का
नई दीवारों पर चुनने का ....

कोहरा और उजास

उस सुरमयी रात की लालिमा
दरख्तों की सोई परछाईयां
और आकाश में बादलों के बीच छिपा चाँद
ज्यों का त्यों

दृश्य बदलता है जहन में आज भी मेरे
सर्द रातों में कोहरा और उजास छांटता –
बांटता रहता हूँ
अक्सर तन्हाइयों में

न जाने जुगनुओं को क्या हुआ था उस रात
जब सुरमई उजास लिये बादलों के बीच छिपा
था चाँद

घाटियों में छाई धुंध
पर्वतों को घेरने लगी थी
लालिमा सुरमई से स्याह होती गई
मैं ठगा – सा
पर्वतों पर कोहरे की जबरन देखता रह गया
जबकी पास थी वो मेरे
और उसके पास
एक भविष्य था मुठि्ठयों मुठि्ठयों में भींचा हुआ

कहा था उसने
तुम उदास क्यों हो प्यारे
इन पर्वतों के पार समंदर है
और उसके पार एक देश
देश में पर्वत है, जंगल है, कोहरा है, चाँद है
और ऐसी ही सुरमई रात
यह अंतिम आवाज थी
जो लौटा न पाई घाटियाँ

कोहरा पसर आया था जंगल में पूरे
अभी बादलों के बीच छिपा था चाँद
और दरख्त परछाइयों में सोये रह गये।

लक्ष्मण सिंह

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित–अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं
राहुल सांकृत्यायन

"मेरे नहीं हो तुम"

देवता के रूप में मैंने तुम्हें पूजा,
मिले तो बहुत पर भाया नहीं दूजा,
मेरी हर आस में हो तुम,
मेरी हर श्वास में हो तुम,
मगर मेरे नहीं हो तुम। मगर मेरे नहीं हो तुम।।

मेरे प्राण भी हो तुम, मेरे परित्राण भी हो तुम,
अनुनय भी तुम्हीं मेरे, सविनय भी तुम्हीं मेरे,
पालनहार भी तुम्हीं मेरे, तारणहार भी तुम्हीं मेरे मैं जानता हूँ
ये मेरा अस्तित्व भी तुम हो,
मगर आश्वस्त भी हूँ, मेरे नहीं हो तुम।
मेरे नहीं हो तुम ।।

मेरे अधिकार में तुम हो, मेरे कर्तव्य में तुम हो,
मेरे मौन में भी तुम, मेरे वक्तव्य में भी तुम,
मेरी आराधना, प्रार्थना और साधना में बस तुम्हीं तुम तो
मगर कैसे मैं ये भूलूँ, मेरे नहीं हो तुम।
मेरे नहीं हो तुम ।।

मेरी हर उषा, अपरान्ह और संध्या तुम्हीं से है,
गीत संगीत, आदर अनादर सब तुम्हीं से है,
मेरे हर ताल, सुरलय, में जय पराजय में तुम्हीं तुम हो,
तो विध्न, बाधा कौन सी है, जो मेरे नहीं तो तुम।
मेरे नहीं हो तुम ।।

जल में, थल में, बिम्ब में, प्रतिबिम्ब में,
तुम ही तो रहते हो,
ये धरातल, ये रसातल, ये भूखंड, ये जलखंड,
सब तुम्हारे नियन्त्रण में,
इस जग के निर्माता, नियंता, अभियंता भी तुम्हीं हो,
तो ये क्यों नहीं स्वीकारते, मेरे नहीं हो तुम।
मेरे नहीं हो तुम ।।

मैंने हर ख्वाब में ढूंढा, मगर आए नहीं तो तुम,
मैंने हर राह में ढूंढा, मगर आए नहीं तो तुम,
अग्रहायण, पौष के कंपकपाते, शीत में आए नहीं तो तुम,
ज्येष्ठ की तपती दोपहरी में आए नहीं तो तुम,
अब तो जाने को ये मधुमास श्रावण भी,
मगर आए नहीं तो तुम। मगर आए नहीं हो तुम ।।

अगर अब भी नहीं आए, तो मेरी अंतिम अर्चना और वेदना सुन लो,
मेरी अंतिम श्वास भी ये ही कहेंगी प्रियतम,
मेरे सर्वस्व होकर भी मेरे नहीं तो तुम।
मेरे नहीं हो तुम ।।

डॉ सतीश चन्द्र शर्मा,
(अध्यक्ष, हिंदी कार्यान्वयन समिति, 2008–2012)

हिंदी ने राष्ट्रभाषा के पद पर सिंहानसारूढ़ होने पर अपने ऊपर एक गौरवमय एवं गुरुतर उत्तरदायित्व लिया है
गोविंदबल्लभ पंत

रचनाएं

हरा समन्दर गोपी चन्दर

बचपन के दिन भी क्या दिन थे। चाहत चाँद को पाने की करते थे और दोपहर से शाम तक कभी बुलबुल तो कभी तितली को पकड़ा करते। न दिन का होश होता था न शाम की खबर होती थी। न कपड़ों की सुध–बुध होती थी न अपनी खबर होती थी। मिटटी कब हमारे कपड़े, चेहरे और बालों में भर लिपट जाती थी। जो मन की डांट–डपट की वजह बन जाती थी। सुबह की नींद बड़ी प्यारी लगती थी जब हमें जल्दी उठाकर स्कूल भेजा जाता था। स्कूल से थके–हारे आने के बाद भी तुरंत खेलने के लिए बाहर भाग जाते थे।

वो सारे बचपन के खेल हमें कितना कुछ सीखाते थे। कभी आपस में लड़ाते तो कभी साथ मिलकर मुस्कुराते। अपनी बचकानी की हरकतों से हम दूसरों को कितना सताते थे। उस वक्त हम कितने शरारती कहलाते थे। शोर– शराबा, हल्ला–गुल्ला खूब मचाते थे। अपने पसंद के रंग की कितनी पतंगें उड़ाते थे। एक के बाद एक पतंग कट जाने पर भी हार हम कभी नही मानते थे। पतंग का ये खेल हमें बताता और सिखाता है कि उम्मीद की डोर भले ही कट जाए पर हार कभी नहीं मानना।

बर्फ–पानी, छुप्पन–छुपाई, उंच–नीच का पापडा, चोर– सिपाही, आँख –मिचोली, राजा–मंत्री, चोर–सिपाही का खेल भाईचारा, आत्मविश्वास हमारा बढ़ाते थे। खो– खो, पिट्ठू, कबड्डी, रस्साकस्सी, लंगड़ी पाव्वा, गिल्ली डंडा पसीना हमारा बहाते थे। हमको हष्ट–पुष्ट, बलिष्ट और मजबूत बनाते थे।

अक्कड़ बक्कड बम्बे बो, अस्सी नब्बे पूरे सौ,
सौ में लगा धागा, चोर निकलकर भागा, और
हरा समन्दर गोपी चन्दर ,
बोल मेरी मछली कितना पानी।

जैसे वाक्य हमारे जीवन के मूल्य बढ़ा देते थे। आज जब मैं सोचती हूँ कि इस खेल की उपज किसने और क्यों की? ये खेल खिला हमारे बुजुर्ग हमको बचपन में आने वाले कल(आज) से आगाह नहीं कर रहे थे क्या? जब खेल में लगातार पानी की होती कमी के बीच में मछली बना साथी मरने का अभिनय करता था तो उस समय तो हमको, हमारे बाल मन को बहुत दुखता था। इतना ही समझ आता था कि काश! ये बच जाती और बचती तभी जब हमारे बनाए भरे समन्दर में पानी रहता। इस तरह जल संरक्षण की भावना को हमें खेल द्वारा बाल्यकाल से ही समझाया गया और पानी की उपयोगिता और संरक्षण के लिए प्रेरित किया। वहीं

पौसम्म पा भई पौसम्म पा डाकिये/डाकुओं ने क्या किया? सौं रूपये की घड़ी चुराई, दो रूपये की रबड़ी खाई।

अब तो जेल में जाना पड़ेगा, जेल की रोटी खानी पड़ेगी,
जेल का पानी पीना पडेगा। अब तो जेल में जाना पड़ेगा।

शब्दों के बिना जहाँ हमारे सारे खेल अधूरे हुए करते थे वही यह लाइन छोटे बच्चों को चोरी से बचाने व उसे एक बुरी आदत के रूप में समझाए व ऐसा करने से मिली सजा को समझाने में भी काफी सार्थक होती थी। लेकिन आज वक्त के साथ बदल गया है बचपन और बचपन के खेल। आज बचपन के ये खेल कहीं खो गए हैं। मोबाईल, कंप्यूटर, फेसबुक, इन्स्टाग्राम, व्हाट्सअप तक सीमित हो गए हैं। आज बचपन की शाम नहीं होती, सुबह के बाद सीधी रात होती है।

अब गलियों, पार्को में न कोई शोर सुनाई देता है और न अब आंगनों में सिकड़ी बनी होती है। क्योंकि अब इन्हें हम में से किसी समझदार ने STATUS SIMBLE से बाँध दिया है। अब कहा जाता है कि यह खेल शरीफ घर के बच्चे नहीं खेला करते। जिसकी वजह से हमारे ये बचपन के खेल अब जल्द ही इतिहास के पन्ने बन जाएँगे।

सच कहूँ तो आज का बचपन कहीं खोता हुआ नजर आ रहा है। समय से पहले बच्चे बड़े हो रहे हैं, पर शायद वो अपने जीवन के उन सुनहरे पलों को नहीं जी पा रहें हैं, जो आपने और हमने जिए हैं। इसी वजह से वे अकेलेपन का शिकार हो रहे हैं। स्कूलों के बस्तों का बोझ दिन व दिन बढ़ता जा रहा है और बच्चे धीरे– धीरे दबते जा रहे हैं।

आज हमें जरूरत हैं कि हम उन्हें हकीकत की दुनिया से रूबारू कराने की, जिससे वो अपने आज को खुल के जी सके और आने वाले कल में वे भी यह कह सकें :–

बचपन का भी वह क्या जमाना था
हँसता – मुस्कुराता खुशियों का खजाना था
खबर न थी सुबह की, न शाम का ठिकाना था
छादा–दादी, नाना–नानी की कहानियों में परियों का फसाना था

अपनी सुध–बुध न थी, न गम–दु:ख का फसाना था
अब रही न वो जिन्दगी जैसा हमारा बचपन का जमाना था।

श्रेय्शी नारायण

हिंदी जिस दिन राजभाषा स्वीकृत की गई उसी दिन से सारा राजकाज हिंदी में चल सकता था
सेठ गोविंददास

विकास की सीढ़ी – शिक्षा

ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मामृतं गमय।।
ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः।। - अर्थात्

मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो।
मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो।
मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।।

प्रकाश से यहाँ तात्पर्य ज्ञान से है। ज्ञान हमे शिक्षा से ही प्राप्त होता है। शिक्षा से ही मनुष्य की जन्मगत शक्तियों का प्राकृतिक सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील निरंतर विकास होता हैं। जिस तरह मनुष्य को जीने के लिए रोटी, कपड़ा, मकान जैसी आधारभूत आवश्कताएँ है, उसी प्रकार शिक्षा मनुष्य की समझ और विवेक को विकसित कर जीवन में प्रगति के पथ पर अग्रसर कर सोचने, कार्य करने और आगे बढ़ने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा मनुष्य को अज्ञानता के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती है।

शिक्षा जहाँ मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाती है, वहीं मनुष्य के व्यक्तित्व एवं सामाजिक जीवन में सामंजस्य और संतुलन प्रदान करती है। देश व समाज में समानता बनाने तथा आर्थिक स्थिति पर बाधाओं तथा भेद–भाव को दूर करने के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। महान शिक्षाविद् ज्योतिबा फुले का यह कहना है कि –

शिक्षा के बिना समझदारी खो गई,
समझदारी के बिना नैतिकता खो गई,
नैतिकता के बिना विकास खो गया,
इसीलिए शिक्षा महत्वपूर्ण है।

किसी भी व्यक्ति या देश का भविष्य उसकी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। शिक्षा से ही मनुष्य अपने समाज में सफलता, सम्मान, मान्यता और अच्छी पहचान बना सकता है। यह सिर्फ जीवन जीने के लिए आधार ही नहीं बल्कि एक सशक्त हथियार भी है, जो देश या समाज में व्याप्त अन्याय, भ्रष्टाचार, असमानता, कुरीतियों के खिलाफ लड़ने व विरोध करने का आत्मविश्वास प्रदान करती है क्योंकि –

कर्तव्यों का बोध कराती, अधिकारों का ज्ञान,
शिक्षा से ही मिल सकता हैं, सर्वोपरि सम्मान...”

शिक्षा या विद्या वह सर्वश्रेष्ठ धन है जिसे आपसे कोई नहीं चुरा सकता है। "शिक्षा वह शक्तिशाली हथियार है जिसे आप दुनिया को बदलने के लिए उपयोग कर सकते है" (EDUCATION IS THE MOST POWERFUL WEAPON WHICH YOU CAN USE TO CHANGE THE WORLD & NELSON MANDELA) यदि हम इतिहास को देखें तो हम पाते हैं कि जहाँ विभिन

राजाओं ने अनेक लड़ाइयाँ तलवार की नोंक पर जीती और साम्राज्य स्थापित किये, वहीं चाणक्य ने अपनी बुद्धि से सम्पूर्ण नंदवंश का नाश कर चन्द्रगुप्त को राजा बनाया।

तुलसीदास और कालिदास शिक्षा के ज्ञान के प्रकाश से उत्तम विद्वान् बन गए। आज का आधुनिक युग एक प्रगतिशील पहिए की तरह लगातार घूम रहा है आज की जाने वाली खोज कल पुरानीं हो जाती है यह परिवर्तन इतनी तेज गति से घटित हो रहा है कि इस युग को आधुनिकता का क्रांतिकारी युग कहा जा सकता है। आज के आधुनिक तकनीकी संसार में तकनीकी संसाधनों का विकास इतना हो चुका है कि मनुष्य को अपना जीवनयापन करने और जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए शिक्षित होना अनिवार्य है।

यदि हम आज के संदर्भ में देखे तो कोरोना काल की परिस्थिति में जो लोग शिक्षित हैं वे आधुनिक तकनीकी ज्ञान के आधार पर अपनी जीविका एवं जीवनयापन करने में सफल रहें। इसके विपरीत मजदूर व अशिक्षित वर्ग शिक्षा के आभाव में इन आपातकालीन परिस्थितियों में सामंजस्य व संतुलन विकसित नहीं कर सकें और बेरोजगारी भूखमरी और पलायनवाद की स्थिति को भोगने के लिए मजबूर हुए। इसीलिए देश के प्रत्येक नागरिक का शिक्षित होना बहुत ही महत्वपूर्ण व आवश्यक है क्योंकि –

सामाजिक, आर्थिक, नैतिक मूल्यों का हो निरंतर विकास,
तभी बने एक देश महान, जब हो शिक्षा उसका आधार।
ऊँच – नीच का भेद न होगा, शिक्षित जहाँ हर जन होगा,
सफलता और समृद्धि में अग्रसर होगा, विकसित वह देश होगा।

सुनीता

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के
गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता
देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

दादी माँ

मैं चाय का पानी चढ़ा ही रही थी कि दरवाज़े की घंटी बजने की आवाज़ आई, मैं समझ गई मेरा बेटा करन है। ऑफ़िस से आते ही उसको चाय चाहिए, उसके आने से पहले ही मैं चाय का पानी गैस पर चढ़ा देती थी।
दरवाज़ा खोला सामने करन खड़ा था, मुस्कराते हुए अंदर आ गया। सोफ़े पर अपना लैप्टॉप बैग पटकते हुए बाथरूम में घुस गया।

जितनी देर में वो फ्रैश हो कर आया मेरी चाय बन चुकी थी। चाय की चुस्की लेते हुए करन ने शरारती मुस्कान बिखेरते हुए कहा "माँ तुमसे बढ़िया चाय कोई नहीं बना सकता है। "मैंने मुस्करा कर उसकी तरफ़ देखते हुए कहा "क्या बात है आज मेरी बड़ी तारीफ़ हो रही है। "करन ने झूठमूठ का गुस्सा दिखाते हुए मुझे घूर कर कहा "माँ कब आपकी तारीफ़ नहीं की है मैंने, और झूठ थोड़ी कहा है, जो सच है वही कहा है"। मैंने करन के बालों में हाथ फिराते हुए पूछा "क्या बात है? बता तो सही" करन नीचे देखते हुए बोला "माँ मनु शादी के लिए पीछे पड़ी हुई है"

"अरे इसमें इतना शर्माने की क्या बात है, मनु तो बहुत अच्छी लड़की है" मैंने खुश होते हुए कहा। मनु करन में काफ़ी अच्छी दोस्ती थी। एक दूसरे को अच्छी तरह समझते भी थे। एक साथ पढ़े भी थे। मेरी हाँ सुनते ही करन अपना मोबाइल लेकर अपने कमरे में मनु को फ़ोन पर ये खुश ख़बरी देने चला गया।

मैं करन की शादी की तैयारी में जुट गई। करन की शादी धूमधाम से हो गई। मनु आज हमारे घर की बहु बन चुकी थी। मेरी खुशी तो दुगनी हो चुकी थी। आज मैं सासु माँ भी बन चुकी थी। मनु को मैं बहुत प्यार देना चाहती थी शायद जो मैं कभी नहीं पा सकी थी बहु बन के। मैं मनु पर सारी खुशियाँ लुटा देना चाहती थी।

मनु को मैं कोई काम नहीं करने देती थी। वो किचिन मैं आती भी थी तो उसको वापिस ये कह कर भेज देती थी। "सारी ज़िंदगी तुमको ही तो करना है, थोड़े दिन आराम कर लो "शायद ये ही मेरा लाड़ और प्यार था। मनु ने बताया आज उसकी माँ, भैया भाभी आने वाले हैं। शादी के बाद आज वो पहली बार आ रहे थे। मनु से पूछ कर मैंने उनकी पसंद का नाश्ता और डिनर तैयार कर लिया।

दरवाज़े की घंटी बजते ही मनु ने दौड़ कर दरवाज़ा खोल दिया, उसकी खुशी एक बच्चे की तरह ज़ाहिर हो रही थी जो अपनी पसंद का खिलौना देख कर खुश हो जाता है। मनु की माँ मनु और करन के लिए बहुत सारे गिफ़्ट लाई थीं। मनु खुश हो कर सारे गिफ़्ट उठाते हुए बोली "मम्मी माँजी का गिफ़्ट कहाँ है" मनु की माँ ने एक गिफ़्ट मुझे देते हुए कहा "इनके लिए भी है ना" उनके गिफ़्ट देने के तरीक़े से लग रहा था जैसे मुझे मजबूरी में दे रही हों, थैंक यू कह कर मैं जाने कि लिए जैसे ही मुड़ी मनु ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा माँ अपना गिफ़्ट खोल कर तो देखिए जैसे उसे भी गिफ़्ट देखने की जल्दी थी। मनु की माँ ने आँख के इशारे से कुछ कहा मनु ने मेरा हाथ छोड़ दिया। बाद में खोलूँगी कह कर मैं चाय लाने के लिए चल दी। मनु की माँ ने चाय की तारीफ़ करते हुए कहा "चाय के साथ अगर पकौड़े होते तो चाय का मज़ा दूना हो जाता" "मैं अभी बना कर लाती हूँ" मैंने उठते हुए कहा।

कमरे से बहार निकलते ही मनु की आवाज़ अपनी मम्मी पर गुस्सा करते हुए मेरे कानों तक आई, "माँ आपने माँजीं से पकोड़े की फ़रमाइश क्यों की"।

मनु की माँ की आवाज़ सुन कर मेरे क़दम वहीं रुक गए जो वो कह रही थीं , मैं सुनना ही नहीं चाहती थी। मैंने दोनो हाथों से अपने कान बंद कर लिए और किचिन की तरफ़ मुड़ गई। जो शब्द मैं इतने साल से भुलाने की कोशिश कर रही थी, वही आज उन्होंने फिर याद दिला दिया। मनु की माँ की बातें एक शूल की तरह चुभ रहीं थीं।

मनु की माँ मनु से कह रही थीं. "तेरी सौतेली सास ही तो हैं यहाँ बैठी–बैठी हमारी बातें सुनती इसलिए पकौड़े के बहाने उनको भेज दिया मैंने"। सौतेली माँ सुन–सुन कर मेरे कान पक चुके थे, आज फिर सौतेली शब्द कान में तेज़ाब सा घोल रहा था। "मैं सिर्फ़ करन की माँ हूँ, सौतेली माँ नहीं" मैंने खीजते हुए अपने आप से कहा। करन को मैंने एक सगी माँ की तरह ही प्यार किया था। उसकी देखभाल एक सगी माँ से भी ज़्यादा की थी।

यादों की लहर मुझे कई साल पीछे खींच कर ले गई –
जब मैं करन की माँ बन कर आई तब करन सिर्फ़ दो साल का ही तो था, उसकी माँ के गुज़रने के बाद उसके पिताजी मुझे ब्याह कर तो लाए थे, पर पत्नी का दर्जा कभी नही दिया। मैं सिर्फ़ करन की सौतेली माँ बन कर ही रह गई।

करन के सारे काम मैं ही करती थी, वो जब अपनी तोतली जवान से माँ कहता तो दिल को एक अजीब सी ठंडक सी मिलती थी। मैं उसको अपने सीने से लगा लेती थी। उसको सीने से लगा कर मुझे सारे जहाँ की ख़ुशियाँ मिल जाती थीं।

लोगों को मेरी ये ख़ुशी मंज़ूर नहीं थी। उन्होंने करन के कान भरने शुरू कर दिए कि ये तेरी सौतेली माँ है। मैं सोचने पर मजबूर हो जाती थी, "क्या सौतेली माँ होना भी एक जुर्म है"?
करन कुछ ग़लत करता तो उसका दोष भी मुझ पर ही लगाया जाता था, पढ़ाई में कम अंक आने पर भी मेरी कमी ही बताई जाती थी।

करन की आवाज़ पर मैं यादों से बाहर निकली "माँ आप रसोई में क्या कर रही हैं वहाँ चल कर सबके साथ बैठिए" मैं पकौड़े बनाने आई थी" मैंने रूँधी हुई आवाज़ में कहा"। करन मेरा हाथ खींचते हुए बोला "पकौड़े बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है, मैं समोसे ले कर आया हूँ, चलिए आप सब के साथ बैठिए"। करन अपने साथ मुझे अंदर ले गया जहाँ सब बैठे थे। सुबह सजाया हुआ कमरा मनु के भतीजों ने तहस नहस किया हुआ था। मनु की माँ सबसे हँस–हँस के बात कर रही थीं सब खिलखिला कर हँस रहे थे। उनके एक शब्द 'सौतेली' ने मुझे अंदर तक हिला कर रख दिया था। मैं फिर एक बार माँ से सौतेली माँ बन गई थी। करन के पिताजी के जाने के बाद मैंने ही करन को पूरी तरह सम्भाला था। करन ने दिल से मुझे अपनी माँ मान लिया था।

आज करन की सास ने फिर से मेरे दिल में दबी हुई चिंगारी भड़का दी थी। उन्होंने मुझे फिर से माँ से सौतेली माँ बना दिया था। मनु की माँ मनु से मिलने पूरे परिवार के साथ हर रविवार को आ धमकती थीं। रात का खाना खा कर ही जाती थीं। जाते जाते मनु के कान में सौतेली माँ का जाप करना नहीं भूलती थीं।

मनु की माँ रविवार की जगह आज मंगलवार को ही आ गई थीं। अपने साथ गिफ़्ट, मिठाई, फल भी लाई थीं। सीधे मनु के कमरे में चली गईं, उनको अचानक आता हुआ देख कर मुझे कुछ अटपटा सा लगा क्योंकि वो आने से पहले मनु को फ़ोन कर के अपने आने की सूचना दिया करती थीं। मेरा मन भी हुआ कि उनके पीछे जाऊँ और सुनु क्या बात है, जो ये रविवार की जगह मंगलवार को ही आ गई हैं। मैं कुछ सोच पाती इससे पहले ही मनु के कमरे में से बधाई हो की आवाज़ आने लगी। मनु की माँ किस बात की बधाई दे रही हैं मुझे बहुत आश्चर्य सा हुआ की मैं घर में रहती हूँ और मुझसे पहले इनको पता चल गया।

मैंने मनु के कमरे की तरफ़ अपने क़दम बढ़ाए ही थे, "मनु बधाई हो तुम माँ बनने वाली हो" मनु की माँ ने मनु का माथा चूमते हुए कहा। क्या! मनु माँ बनने वाली है, और मुझे पता ही नहीं चला, इसका मतलब मनु ने मुझ से पहले अपनी माँ को बताना ज़रूरी समझा। 'कोई बात नहीं' कह कर मैंने अपने मन को समझा लिया। इतनी बड़ी ख़ुशी के सामने ये सब भूल कर मनु को बधाई देने उसके कमरे की तरफ़ चल दी। कमरे के बाहर ही ठिठक कर रुक गई, मनु की माँ की आवाज़ कान में पिघले हुए शीशे की तरह लग रही थी।

देख मनु "अपनी सौतेली सास से अब बच कर रहना, अच्छा हुआ जो तूने अभी उनको नहीं बताया है। अभी बताने की ज़रूरत भी नही है"। माँ मैंने तो आप को भी नहीं बताया था। आप को कैसे पता चला? मनु ने ज़ोर देते हुए कहा। "मुझे डॉक्टर मोना ने बताया जहाँ तुम अपना चेकअप कराने गई थीं" मनु की माँ ने ही–ही करते हुए कहा। मनु ने अपनी मम्मी को भी नहीं बताया था, ये सुन कर दिल को ठंडक सी पहुँची। मैंने मनु को बधाई दी। मनु ने मेरे पैर छूते हुए कहा "माँ मैं आप को बताने ही आ रही थी". मैंने मनु को गले से लगाते हुए आशीर्वाद दिया। फ़ोन की घंटी बजे जा रही थी. मैंने जल्दी से आटे से सने हाँथों को साफ़ कर के फ़ोन उठा कर हैलो किया। उधर से मेरी भाभी अपनी मधुर आवाज़ में भतीजे की शादी का न्योता दे रही थीं। "दीदी थोड़ा जल्दी आ जाना आप से पूँछ कर ही सारे रीति रिवाज करूँगीं मुझे तो कुछ पता नहीं है"। भाभी ने अनुरोध भरी आवाज़ में कहा। "हाँ–हाँ आ जाऊँगी" मैंने ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए कहा।

मनु की डिलीवरी में अभी काफ़ी समय था, इसलिये मैंने सोचा कुछ दिन मायके रह आऊँगी शादी के बहाने ही सही। भाभी कई बार बुला चुकी थीं पर जाना ही नहीं हो पाता था। मनु की देखभाल के लिए उसकी माँ है ना, वैसे भी तो आती ही रहती हैं मैंने मन ही मन सोच लिया। भतीजे की शादी में जाने के लिए मैंने पूरी तैयारी कर ली थी। मनु और करन से विदा ले कर भतीजे की शादी में शामिल होने के लिए शादी से दो दिन पहले ही चल दी थी। स्टेशन पर भाई और भतीजे को देख कर मुझे बहुत ही ख़ुशी हुई वो मुझे लेने आए थे। भतीजे ने मेरे पैर छूते हुए पूछा "बुआ करन भैया और भाभी नही आए". भतीजे को आशिर्बाद देते हुए मैंने कहा "मैं आ तो गई"।

भाभी ने गले से लगते हुए हुए कहा "दीदी आप तो हमको भूल ही गई हो", "अरे अगर भूल जाती तो दो दिन पहले थोड़ी आ जाती" मैंने मुस्कराते हुए कहा। सब मेरे आसपास ही बैठ गए, बातों में पता ही नही चला कब रात हो गई। मेहमान आने शुरू हो गये थे। शादी की रौनक़ बढ़ती जा रही थी। ढोलक पर मंगल गीत गाये जा रहे थे। करन ने फ़ोन पर बताया मनु फिसल गई है और डॉक्टर ने उसको बेडरेस्ट बताया है। करन ने ये भी बताया मनु ने अपनी माँ को फ़ोन कर के रहने के लिए कहा था, पर उन्होंने मजबूरी बताते हुए रहने से इंकार कर दिया। उस समय मुझे ऐसा लगा काश मेरे पंख होते मैं तुरंत उड़ कर मनु के पास पहुँच जाती।

मैंने अपना सारा सामान समेटा, और भाभी भैया से माफ़ी माँगने पहुँच गई। भाभी नाराज़ भी हो गईं। मैंने भाभी को समझाया कि इस समय मेरा मनु के पास होना ज़रूरी है। बहू के लिए जो अँगूठी लाई थी वो भाभी को देते हुए विदा ली। भरी हुई आँखे छलक गईं। "दीदी शादी तक रुक जातीं तो बहुत खुशी होती", भाभी ने मायूस हो कर कहा. "रुक जाती आई ही शादी के लिए थी, पर क्या करूँ इस समय मनु को मेरी ज्यादा ज़रूरत है". मैंने अपने आँसू रुमाल से पोंछते हुए कहा। मनु और करन मुझे यूँ अचानक आते हुए देख कर चौंक गए। "अरे! माँ आप शादी छोड़ कर आ गई," करन ने आश्चर्य जताते हुए कहा, "हाँ क्योंकि यहाँ मेरी ज्यादा ज़रूरत थी, "मैंने एक लम्बी साँस लेते हुए कहा।

आज वो दिन भी आ गया जिसका इंतज़ार था। मनु की माँ, भाभी और भाई भी हॉस्पिटल आ गये थे। बच्चे को गोद में लिए हुए आती हुई नर्स को देख कर हमारी आँखों में चमक सी आ गई. नर्स मुस्कराते हुए बोली "प्यारी सी गुड़िया है।" मुझसे पहले मनु की माँ नर्स के पास बच्ची को लेने पहुँच गईं। "लाओ मुझे दो बच्ची को मैं बच्ची की सगी नानी हूँ" अपने हाथ फैलाते हुए मनु की माँ ने कहा। नर्स ने बच्ची को मेरी गोद में देते हुए कहा "बच्ची अपनी दादी माँ की गोद में सबसे पहले जाएगी"। 'दादी माँ' शब्द ने मेरे कान में रस सा घोल दिया। आज मैं दादी माँ बन गई सिर्फ़ दादी माँ। इसमें कहीं भी सौतेली शब्द नहीं था।

मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। मन कर रहा था बच्ची को लेकर ही नाचने लगूँ। आज मुझे जैसे सारे जहांन की खुशियाँ मिल गई थीं। मेरी आँखो से खुशी के आँसू गंगा जमुना की तरह बह रहे थे। आज मैं दादी माँ बन कर अपने को बहुत खुशक़िस्मित समझ रही थी। और क्यों ना समझती आज 'सौतेली' का ठप्पा जो कहीं गुम हो गया था।

करन बच्ची की तरफ़ देखते हुए बोला "मनु इसकी आँख तो देखो बिलकुल माँ जैसी हैं"। मनु ने मुस्कराते हुए कहा "होंठ भी माँ जैसे हैं"।

मुझे तो सिर्फ़ "दादी माँ" सुनाई दे रहा था। जिसने मेरी ज़िंदगी ही बदल दी थी।

नीरा वार्ष्णेय "नीराम"

जब हम अपना जीवन, जननी हिंदी, मातृभाषा हिंदी के लिये समर्पण कर दे तब हम किसी के प्रेमी कहे जा सकते हैं

सेठ गोविंददास

वेबिनार एक सफल या असफल प्रयोग

वेबिनार का प्रचलन आम तौर पर कोरोना काल में सामने आया। जिसमें हम सभी ने देखा कि वेबिनार के उपयोग से हमने ऑनलाइन तरीके से एक दूसरे से जुड़ना सीखा जैसे बच्चे अपनी शिक्षा ऑनलाइन माध्यम से ले रहे हैं और हम सब भी लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन जुड़े रहे और दफ्तर के कार्य को सुचारु रूप से कर पाए जो कि वेबिनार की सफलता को दर्शाता है। वेबिनार के उपयोग से कम लागत पर बड़े–बड़े कार्यक्रमों का संचालन सुगमता पूर्वक सफल हुआ। जैसे ही कोरोना महामारी के काले बादल पूरे विश्व में मंडराने लगे सभी के मन में कई शंकाओं ने जन्म ले लिया कि अब क्या होगा? मनुष्य अपना जीवन यापन कैसे करेगा? किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आने वाला समय क्या रंग दिखाएगा? देश कि अर्थव्यवस्था का क्या होगा, मनुष्य के रोजगार का क्या होगा और बच्चों की शिक्षा का क्या होगा?

ऐसे माहौल में वेबिनार एक चमकता हुआ सितारा बन के पूरे विश्व में चमका जिसने सभी के रुके हुये समय को रफ्तार दी। जैसे रुकी हुई अर्थव्यवस्था को रफ्तार दी, मनुष्य के रोजगार को फिर से जीवंत कर दिया और बच्चों की रुकी हुई शिक्षा को फिर से चला दिया।

वेबिनार सॉफ्टवेयर कि उपलब्धियां निम्नलिखित है :

समय व धन की बचत : वेबिनार के माध्यम से हम जो कार्यशालाध्सेमिनार आयोजित करते हैं उसमे ऑफलाइन कार्यशालाध्सेमिनार कि तुलना में न्यूनतम व्यय होता है जो कि वेबिनार कि सफलता का प्रतीक है। इसमे प्रतिभागियों को ऑफलाइन सेमिनार की तुलना में कम खर्च करना पड़ता है और सेमिनार में भाग लेने के लिए यात्रा भी नहीं करनी पड़ती जिसके फलस्वरूप प्रतिभागी के समय व धन दोनों की बचत होती है।

परस्पर दूरी : कोरोना महामारी से बचने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था परस्पर दूरी का पालन करना ताकि कोरोना के संक्रमण को रोका जा सके। जो कि वेबिनार के माध्यम से कुशलता पूर्वक संभव हो पाया। सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने घर या दफ्तर में अपनी सीट में बैठ कर आपस में वेबिनार के माध्यम से जुड़े रहे और अपने कार्य को सुचारु रूप से पूरा किया। इसके अतिरिक्त यदि कोई सेमिनार आयोजित हुआ तो भी उचित दूरी बनाकर उसमें शामिल हुये।

शिक्षा : कोरोना महामारी में सबसे बड़ी चुनौती थी कि बच्चों की शिक्षा को कैसे बढ़ाया जाए? जिससे बच्चों कि पढ़ाई न रुके, निरंतर चलती रहे। वेबिनार के माध्यम से यह चुनौती भी सफलता पूर्वक कर ली गयी। सभी स्कूलों ने ऑनलाइन माध्यम से बच्चों की शिक्षा को रुकने नहीं दिया जिससे बच्चों का साल खराब नहीं हुआ और बच्चे निरंतर आगे बढ़ते रहे।

जब हमने वेबिनार का उपयोग रोजमर्रा के जीवन में करना शुरू किया तो यह पाया कि वेबिनर सॉफ्टवेयर में कुछ कमियाँ हैं जो निम्नलिखित है:

तकनीकी मुश्किलें :

वेबिनार पूरी तरह से इंटरनेट पर निर्भर करता है जो कि बहुत बड़ा जोखिम है। यदि किसी भी कारण से इंटरनेट कि गति रुक जाती है तो प्रस्तुतकर्ता कि प्रस्तुति वहीं रुक जाएगी जिसके

फलस्वरूप अन्य लोग जो वेबिनार से जुड़े हैं उनके समय व धन दोनों कि बरबादी होगी। इसके अलावा जो लोग अपनी सुविधा अनुसार कार में या ऑफिस में ऑनलाइन हैं उनके साथ भी तकनीकी असुविधा आती है।

शारीरिक हाव भाव की कमी :

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी देखा जाए तो यह ज्ञात होता है कि प्रस्तुतकर्ता के शारीरिक हाव भाव जैसे आँखों का संपर्क, चेहरे के भाव आदि भी अपनी विचारों को श्रोताओं तक पहुँचने के लिए आवशयक हैं। एक लाइव संगोष्ठी में यह शारीरिक हाव भाव वक्ता को श्रोताओं के साथ विश्वसनीयता स्थापित करने में मदद करती हैं

उदाहरण के लिए एक वर्सिपदम संगोस्ठी या मीटिंग में जब वक्ता सूक्ष्म विराम लेता है तो श्रोता ये जानतें है कि वो सूक्ष्म विराम क्यूँ है क्योंकि श्रोता वक्ता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा होता है। परंतु वेबिनार में अगर वक्ता कुछ समय के लिए चुप हो जाये तो श्रोता को यह संदेह होता है कि कहीं संपर्क तो नहीं टूट गया या वक्ता गलती से उनजम तो नहीं हो गया।

स्वास्थ्य पर गलत प्रभाव :

जैसा की मैंने पहले अवगत कराया है कि बच्चों की कक्षाएँ ऑनलाइन माध्यम से चल रही हैं इसलिए बच्चों को काफी देर तक मोबाइल से जुड़े रहना पड़ता है जिसके कारण बच्चों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। बच्चों की आँखें कमजोर होने की समस्या आ रही है, मोबाइल से निकलने वाली दुष्प्रभावी किरणों के कारण अनेक प्रकार की बीमारियों का खतरा बढ़ गया है।

प्रतिभागियों का आपस में मिलना :

ऑफलाइन सेमिनार कि सबसे बड़ी विशेषता या उपलब्धि यही है कि सभी प्रतिभागी एवं नए प्रतिभागी आपस में मिलते है और अपनी अपनी कंपनी कि विशेषताओं को एक दूसरे को बताते है या आपस में अपने अपने ज्ञान को सांझा करते हैं। जो कि देश कि अर्थव्यवस्था को बड़ाने कि और सफल कदम है। इसके विपरीत वेबिनर में इस प्रकार कि सुविधाओं का आभाव रहता है।

मैं इसी संदर्भ में यह भी अवगत कराना चाहता हूँ कि हमारा एनसीबी अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार दिसंबर में िलइतपक उवकम में होना तय था मगर कोरोना की दूसरी लहर को देखते हुये िलइतपक उवकम को रोक दिया गया। फिर एनसीबी प्रबंधन ने इसे ऑनलाइन माध्यम से करवाने का निर्णय लिया था यह निर्णय भी संभव नहीं हुआ। फिर एनसीबी शासी मण्डल नें निर्णय लिया कि भले ही एनसीबी अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार कुछ समय बाद किया जाये मगर सेमिनार ऑनलाइन की जगह ऑफलाइन होना चाहिए। जिससे सभी प्रतिभागी आपस में मिल सके और लाभान्वित हो सकें।

धन्यवाद

कपिल इष्टवाल

भारतीय साहित्य और संस्कृति को हिंदी की देन बड़ी महत्त्वपूर्ण है

सम्पूर्णानन्द

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

(भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन)
34 किमी स्टोन, दिल्ली–मथुरा रोड (एनएच–2), बल्लभगढ़–121004, हरियाणा
दूरभाष : +91- 2666600 ई–मेल : nccbm@ncbindia.com

हैदराबाद इकाई

एनसीबी भवन, ओल्ड बॉम्बे मार्ग, गाछीबावली
हैदराबाद–500 008, (तेलंगाना)

दूरभाष : +91-40-23180400, 23180426
फ़ैक्स : +91-40-23000343, 23006739
ई–मेल : uicncbh@ncbindia.com

अहमदाबाद इकाई

समीत बंगलोस, प्लानेट हाउस के पीछे (पीएच–2)
शुकन शुभ–लाभ अपार्टमेंट के सामने, जज
बंगलोस मार्ग
बोडकदेव, अहमदाबाद–380 054, (गुजरात)

दूरभाष : +91-79-26855840
फ़ैक्स : +91-79-40305841
ई–मेल : uicncba@ncbindia.com

एनसीबी भुवनेश्वर - परियोजना कार्यालय

प्लॉट न. 145, ज़ोन–बी, शेड न. 4
आईडीसीओ सेंट्रल स्टोर
मानेस्वर औद्योगिक एस्टेट
भुवनेश्वर -751 010, (ओडिशा)

दूरभाष : +91-9010325172
ई–मेल : ncbodisha@gmail.com
uicncbbh@ncbindia.com

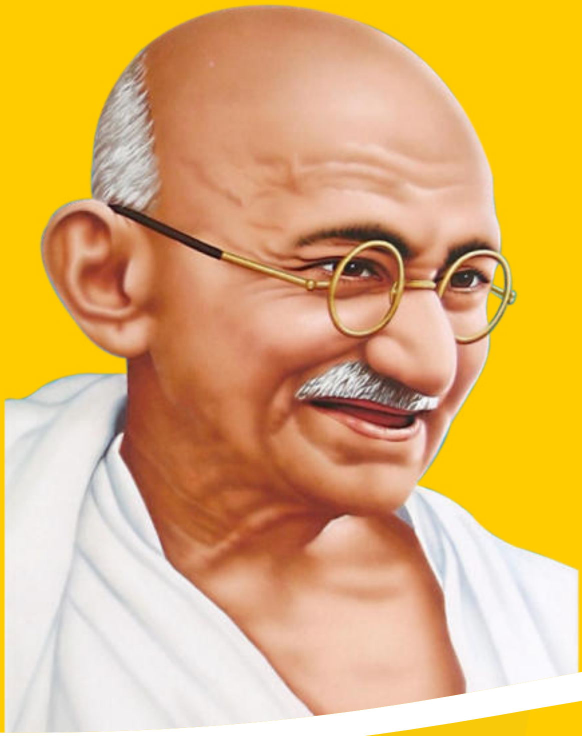

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी
को काम में लाना
देश की उन्नति
के लिए आवश्यक है"

महात्मा गांधी

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

हिन्दी कार्यान्वन समिति

राष्ट्रीय सीमेंट एंव भवन सामग्री परिषद्

(वणिज्य एंव उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन)
34 कि. मी. स्टोन, दिल्ली - मथुरा रोड (एनएच - 2), बल्लबगढ़. - 121 004, हरियाणा